श्री तकषी शिवशंकर पिल्लै, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, प्रदान कर रही है, मलयालम के एक प्रतिष्ठित कथाकार हैं, जिनकी ख्याति न केवल देश में वरन् विदेशों में भी है।

संस्मरणों और यात्रा वृत्त के अतिरिक्त लगभग पैंतीस उपन्यासों और पाँच सौ कहानियों के लेखक श्री शिवशंकर पिल्लै का जन्म 1912 में दक्षिण केरल के तकषी नामक गाँव में हुआ। आप अपने गाँव के नाम से ही अब जाने जाते हैं। आपने माध्यमिक विद्यालय स्तर तक की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। तदनन्तर आपने विधि का एक पाठ्यक्रम पूरा किया।

साहित्य से आपका प्रारंभिक परिचय **रामायण** और **महाभारत** के अध्ययन से हुआ जिसे आपके पिता, जैसा कि उन दिनों रिवाज़ था, प्रत्येक रात को भोजन के बाद परिवार के सदस्यों को सुनाया करते थे। इस अध्ययन ने आपके युवा मन पर एक अमिट प्रभाव डाला। आपकी कुछ कृतियों में रूप-विधान और संरचना के स्तर पर इन महाकाव्यों की शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। आप कुछ यूरोपीय लेखकों की कृतियों से भी परिचित हुए, विशेषकर मोपासाँ से अत्यधिक प्रभावित हुए। उनके प्रभाव में किशोरावस्था में आपने कहानियाँ लिखनी शुरू कीं और फिर उपन्यास। आपका पहला उपन्यास **त्यागत्तिनु प्रतिफलम्** 1934 में प्रकाशित हुआ, जब आप मात्र बाईस वर्ष के थे। इसके बाद प्रकाशित हुआ **पतित पंकजम्**। अपने प्रारंभिक लेखन में श्री तकषी प्रकृतवाद के समर्थक दिखायी पड़ते हैं। आप 'यौनता' पर खुलकर लिखते हैं ताकि वर्तमान सामाजिक निषेधों को ढा सकें।

लगभग इसी समय केरल में प्रतिभाशाली लेखकों का एक समूह उस समय के भावात्मक लेखन के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था और साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद के एक नये युग में जाने के लिए प्रयत्नशील था। प्रख्यात ए. बालकृष्ण पिल्लै उनमें से एक थे जिनका श्री तकषी पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस नयी प्रवृत्ति के प्रभाव में आपने अपने चारों तरफ की सामाजिक बुराइयों के बारे में लिखना शुरू किया। आपकी अपनी पृष्ठभूमि थी—निचली सतहवाले और जलमग्न, यद्यपि खूबसूरत, देहात के किसान के बेटे। देहात, जिसमें खेतिहर मज़दूर तथा सामाजिक रूप से पिछड़े और उत्पीड़ित पुलय और परय थे और था प्रकृति तथा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध उनका अविरत संघर्ष। इस पृष्ठभूमि ने आपको नयी दृष्टि दी। आपने एक नयी उपन्यास शृंखला शुरू की। पहले प्रकाशित हुआ एलेप्पी के भंगियों के जीवन पर **तोट्टियुडे मकन** नामक उपन्यास और बाद में कुट्टनाड के पुलय और परय की दुर्दशा पर **रण्टिडङ्ङषी**। इन उपन्यासों द्वारा मलयालम में सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास उत्कर्ष के एक उच्च स्तर पर पहुँचा।

श्री तकषी मात्र सामाजिक यथार्थवाद तक ही सीमित नहीं रहे। अपने अगले बृहत उपन्यास **चेम्मीन** में आप स्वच्छंदतावादी यथार्थवाद की तरफ़ मुड़े। यह केरल के मछुआरों की एक प्रेम-कथा है। यह कथा समुद्र की पृष्ठभूमि और मछुआरों के विश्वासों तथा अंधविश्वासों के परिप्रेक्ष्य में विद्यमान एक शक्तिशाली मिथ पर आधारित है, जो एक ग्रीक त्रासदी के स्तर तक पहुँचती है। **चेम्मीन** निस्संदेह एक 'क्लासिक' रचना है, जिसके लिए आपको 1957 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया। इसका अनुवाद जल्दी ही अनेक भारतीय और विदेशी भाषाओं में हुआ।

अपनी नयी कृति **कयर** में जो आपकी महत् रचना है, श्री तकषी ने केरल के विगत डेढ़ सौ वर्षों के जीवन का वर्णन किया है और एक सामंती समाज से आज तक के विकास को प्रस्तुत किया है। यह एक विविध स्वर वाली कृति है जिसमें यथार्थवाद, फंतासी, दंतकथा और पुराणकथा घुलमिल कर एक पच्चीकारी निर्मित करते हैं और इसे केरल की एक श्रेष्ठ कथाकृति बना देते हैं।

श्री तकषी एक उपन्यास के बाद दूसरा उपन्यास लिखते जाते हैं और जीवन की अपनी गहरी समझ तथा दुर्लभ मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि के माध्यम से पात्रों की मानवीय स्थितियों और व्यवहार-प्रतिमानों का चित्रण करते हैं। प्रत्येक चरित्र अपना निजी व्यक्तित्व रखता है और अपनी नियति की ओर अपने ढंग से बढ़ता है। यह कार्य आप एक महान कलाकार की तरह करते हैं, एक मिज़ाज और वातावरण निर्मित करते हैं और उनके जरिए एक स्थिति और एक अनुभव को सम्प्रेषित करते हैं। कमोबेश यही आप अपनी कहानियों में भी करते हैं, जिस विधा में आप निष्णात हैं और उत्कर्ष में आप मोपासाँ और चेखॉव के समतुल्य समझे जाते हैं। निस्संदेह श्री तकषी के पास एक सर्वग्राही दृष्टि है जिससे केरल के जीवन की समूची बुनावट आपकी कृतियों में जीवंत हो उठती है।

श्री तकषी को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हो चुके हैं: **चेम्मीन** के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1957), **एणिप्पडिकल्** के लिए केरल साहित्य अकादेमी पुरस्कार (1965), **कयर** के लिए वायलार पुरस्कार (1980) तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार (1984), और सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार (1974)। केरल विश्वविद्यालय और महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम् ने आपको डी. लिट. की मानद उपाधि प्रदान की। भारत सरकार ने 1985 में आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

इन पुरस्करों ने श्री तकषी को प्रभावित नहीं किया और आप किसान-पुत्र ही बने रहे—सहज रूप से विनम्र और मिलनसार, जो बड़ों और छोटों में समान रूप से बड़ी सहजता से शामिल हो सकते हैं और यदि जरूरत हो तो खुद अपने पर भी हँस सकते हैं।

मलयालम में एक कथाकार के रूप में उत्कर्ष के लिए साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, श्री तकषी शिवशंकर पिल्लै को प्रदान करती है।

Sri Thakazhi Sivasankara Pillai, on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is a distinguished novelist and short story writer in Malayalam, whose fame as writer has spread far and wide not only in this country but also beyond.

An author of some thirty-five novels and five hundred stories, besides memoirs and travelogues, Sri Sivasankara Pillai was born in 1912 at village Thakazhi in South Kerala, by which place name he is popularly known. All the formal education he had was up to the Secondary School level, followed by a course in Law.

His earliest introduction to literature was through the readings of the *Ramayana* and the *Mahabharata* which his father, as was the custom of the day, used to read out to the members of the family after supper every night. These readings left a lasting impression on his young mind, and one can find the strains of these epics, in terms of form and structure, in some of his works. He was also exposed to the writings of European masters, particularly Maupassant who cast a spell on him. Working under it, he started writing short stories at a young age, and then took to writing novels. His first novel, *Tyagattinu Pratiphalam*, came out in 1934, when he was only twenty-two. This was followed by *Patita Pankajam*. These early writings show Sri Thakazhi as a votary of naturalism, writing freely on sex in an effort to tear down the prevailing social taboos.

About this time, a band of brilliant writers in Kerala were waging a war against the sentimental writings of the day, trying to usher in a new era of social realism in literature. The legendary A. Balakrishna Pillai was one of them who wielded a strong influence on Sri Thakazhi. Under the impact of the new trend, he started writing about the social evils around him. His own background as the son of a landed farmer from the low-lying and water-logged, though colourful, countryside with its agricultural labourers and socially backward and oppressed Pulayas and Parayas, and their ceaseless struggle against nature and the prevailing social system gave him new insights. He came out with a new series of novels. First came *Thottiyude Makan*, a novel on the life of the scavengers of Aleppey, and then *Randidangazhi* on the plight of the Pulayas and Parayas of Kuttanad. With these novels, the social-realistic novel in Malayalam reached a high degree of excellence.

Sri Thakazhi, however, did not stop with mere social realism. In his next major novel, *Chemmeen*, the mood changed to romantic realism. It is a love-tale of the fisherfolk of Kerala, but raised to the heights of a Greek tragedy, built around a powerful myth against the backdrop of the sea and the beliefs and superstitions of the fisherfolk. *Chemmeen* is indeed, a classic which won him the Sahitya Akademi Award in 1957, and was soon translated into many Indian languages and several languages abroad.

In his recent work *Kayar*, his *magnum opus*, Sri Thakazhi deals with the life of Kerala of the past hundred and fifty years and traces its evolution from a feudal society to its present position. It is polyphonic work in which realism, fantasy, legend and mythology blend together into a mosaic to make it a great epic of Kerala.

In novel after novel, Sri Thakazhi with his keen understanding of life and rare psychological insight, delves into human situations and behaviour patterns of his characters. Each character, however, has his own personality and each treads his own course towards his destiny. This he does like a master artist, builds up a mood and atmosphere, and through them conveys a situation and an experience. This is precisely what he does in his short stories too, of which genre he is considered an accomplished master and often compared with Maupassant and Chekhov for excellence. Sri Thakazhi's is unquestionably an all-encompassing vision and the entire fabric of life of Kerala comes alive in his works.

Sri Thakazhi is the recipient of many awards and distinctions: the Sahitya Akademi Award in 1957 for *Chemmeen*, the Kerala Sahitya Akademi Award for *Enippadikal* in 1965, the Vayalar Award and the Jnanpith Award for *Kayar* in 1980 and 1984 respectively, and the Soviet Land Nehru Award in 1974. The Kerala University and the Mahatma Gandhi University, Kottayam, conferred on him the degree of D. Litt. (*honoris causa*), and the Government of India honoured him with 'Padmabhushan' in 1985.

All these awards have not affected Sri Thakazhi and he continues to remain a farmer's son transparently modest and affable, who can fostle with the big and the small alike and join them in a good laugh and, if need be, at himself.

For his eminence as a novelist and short story writer in Malayalam, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Sri Thakazhi Sivasankara Pillai.